डाक पंजीयन संख्या - श्रीगंगानगर/105/2009-2011
आर. एन. आई - राजहिन/2003/9899
प्रकाशन दिनांक 1 जनवरी 2011 : मूल्य - पाँच रुपये

अजायब ✡ बानी

वर्ष - आठवां | अंक-नौवां | जनवरी-2011 | मासिक पत्रिका

4 नये साल की शुभकामनाएं

6 इंसानी जामा एक अखाड़ा
(कबीर साहब की बानी)
सतसंग - परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज
(16 पी.एस.आश्रम राजस्थान)

21 मालिक की मौज
परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा
प्रेमियों के सवालों के जवाब
(16 पी.एस.आश्रम राजस्थान)

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व सम्पादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने प्रिन्ट टुडे श्री गंगानगर से छपवाया। **प्रकाशित करने का स्थान** : 1027 अग्रसेन नगर श्री गंगानगर - 335 001 (राजस्थान) फोन - 0 99 50 55 66 71 - राजस्थान व 0 98 71 50 19 99 - दिल्ली

विशेष सलाहकार : गुरमेल सिंह नौरिया **फोन** : 99 28 92 53 04 व 96 67 23 33 04

उप सम्पादिका : नंदिनी **सहयोग** : रेनू सचदेवा, मास्टर प्रताप सिंह व परमजीत सिंह

सन्त बानी आश्रम
16 पी.एस. रायसिंहनगर - 335 039 जिला - श्री गंगानगर (राजस्थान)

e-mail : dhanajaibs@yahoo.co.in | 106 | Website : www.ajaibbani.org

नये साल की शुभकामनाएं

आप सबको नए साल की बहुत–बहुत शुभकामनाएं। दयालु परमात्मा इंसान का जामा धारण करके इस संसार में आता है और हमारे ऊपर दया–मेहर करता है। जिस तरह भूखे को रोटी, प्यासे को पानी मिलता है उसी तरह परमात्मा सदा अपने भक्तों के लिए इस धरती पर आता है।

परमात्मा कभी क्राईस्ट कभी कबीर कभी गुरु नानक के रूप में आया। वही परमात्मा सावन शाह के रूप में और दयालु कृपाल के रूप में इस संसार में आया। हम भाग्यशाली हैं जिन्होंने सर्वशक्तिमान कृपाल के दर्शन किए हैं; पूरे संसार में आपका नाम गाया जाता है।

आपने इस भूले–भटके अनाथ 'अजायब' को अपनी गोद में बिठाया। आपके समान संसार में कोई नहीं है; इसलिए मैं सदा यही गाता हूँ:

आ कृपाल गुरु मैं शगन मनौंदी हां,
के दर्शन दे जाओ मैं वास्ते पौंदी हां, (2)

1. आओ सतगुरु जी मैं अरजां करदी हां,
तेरी संगत दा मैं पानी भरदी हां, (2)
आ कृपाल गुरु .....

2. तेरी झलकी तों सूरज शरमौंदा ऐ,
तेरी महिमा दा कोई अंत ना पौंदा ऐ, (2)
आ कृपाल गुरु .....

3. तेरे बचनां ते मैं आण खड़ो गई हां,
रख लै पत्त साईयां मैं तेरी हो गई हां, (2)
आ कृपाल गुरु .....

4. भिच्छिया पांवीं तूं हैं परउपकारी वे,
खाली मोड़ी नां दर आए भिखारी वे, (2)
आ कृपाल गुरु .....

5. तेरी संगत दा तूं आप सहारा हैं,
तेरे दर आया 'अजायब' विचारा है, (2)
आ कृपाल गुरु .....

मैं अपने प्यारे गुरु कृपाल के नाम पर आप सबको नये साल की बहुत–बहुत शुभकामनाएं और प्यार देता हूँ। आशा करता हूँ आप इस साल अपना ज्यादा से ज्यादा समय भजन–अभ्यास में लगाएंगे।

आपका प्यारा,
अजायब सिंह

सतसंग –परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

इंसानी जामा एक अखाड़ा

कबीर साहब की बानी

16 पी.एस.आश्रम राजस्थान

सन्त–महात्मा मालिक के प्यारे सदा ही परमात्मा के हुक्म में आए हैं और आते रहेंगे यह रास्ता कभी बंद नहीं हो सकता। जो मुल्क और समाज यह कहते हैं कि अब कोई महात्मा नहीं आएगा यह उनका अपना ही ख्याल है। ऐसे लोगों के दिल में परमात्मा से मिलने की तड़प पैदा नहीं हुई होती।

जो बच्चे सतयुग में पैदा हुए और जो अब पैदा हो रहे हैं उन्हें तब भी माता–पिता की परवरिश की जरूरत थी और अब भी है। जिनके दिल में परमात्मा से मिलने का शौंक और तड़प होती है परमात्मा उनके लिए जरूर इंतजाम करता है। हमारे सतगुरु महाराज कृपाल कहा करते थे, ''भूखे को रोटी प्यासे को पानी कुदरत का असूल है अवश्य मिलता है।''

परमात्मा हमेशा ही हमें हमारे घर के बारे में बताने के लिए अपने प्यारे सन्तों को इस संसार में भेजता है। सन्त इस संसार में आकर न कोई नई कौम बनाते हैं और न पहले की बनी हुई कौम तोड़ते हैं। अपने आपको सन्त कहलवा लेना बहुत आसान है लेकिन सन्त बनना बहुत मुश्किल है। सन्त बनने में कई जन्म लग जाते हैं। सन्त पूर्ण होकर भी दम नहीं मारते। हमारे सामने 'नाम' जपकर हमें उदाहरण देते हैं। कबीर साहब कहते हैं:

अग्नि लगी आकाश को, झड़ झड़ पैंण अंग्यिार,
सन्त न होते जगत में, तो जल मरता संसार।

हम दुनियादार लोग समस्याएं पैदा करके उन्हीं में घिर जाते हैं। कोई भी सुखी और शान्त नज़र नहीं आता। हम धन और बच्चों से तृप्त नहीं। जिनके बच्चे नहीं वे बच्चों के लिए जगह–जगह जाकर मन्नतें मानते हैं। जब वही बच्चे कहेकार नहीं होते तो माता–पिता दुख महसूस करते हैं।

लोग सन्तों के पास जाकर अपनी समस्याएं बताते हैं तो सन्त उनसे कहते हैं कि देख प्यारेया! तू इसे प्यार से भोग ले, सब्र कर लेकिन उनका सब्र टूटा होता है। किसी प्रेमी ने कबीर साहब से प्रश्न किया, ''महाराज जी! आप इस संसार को क्या समझते हैं और आपका क्या मिशन है?''

कबीर साहब उस प्रेमी को जवाब देते हुए कहते हैं, ''**इंसानी जामा एक अखाड़ा** है। हर कोई इस मैदाने–ए–जंग में उतरता है। दिल लगाकर मेहनत करने वाला कोई विरला पहलवान ही इसमें कामयाब होता है, वह अपना और अपने मुल्क का नाम रोशन करता है।'' हमारे सतगुरु महाराज कृपाल लाहौर के गूंगे पहलवान की मिसाल दिया करते थे, वह इसलिए मशहूर हुआ क्योंकि वह सारी–सारी रात कसरत किया करता था।

इसी तरह सन्त–महात्माओं का अखाड़ा इससे भी ज्यादा मजबूत होता है। वे इस अखाड़े में सूरमें बहादुर बनकर मजबूत इरादा और फौलाद का दिल लेकर उतरते हैं। बाहर के दुश्मन को तो हम आसानी से जीत सकते हैं लेकिन हमारा जानी दुश्मन मन हमारे अंदर बैठा है मन की फौजों को जीतना बहुत कठिन होता है। सन्त अपने गुरु की दया से इस किले को फतह कर लेते हैं।

कबीर साहब कहते हैं कि एक बाहरी लड़ाई है और दूसरी मानसिक लड़ाई है। महात्मा अंदर जाकर यह लड़ाई लड़ते हैं। बाहरी लड़ाईयां सदा चलती रहती हैं। ये लड़ाईयां जर, जोरू और माया के लिए होती हैं।

त्रेता युग में औरत के लिए बहुत भंयकर लड़ाई हुई। लंकापति राजा रावण, सीता माता को चुराकर ले गया। रामचन्द्र जी महाराज ने अपनी धर्मपत्नी को वापिस लाने के लिए और मर्द की मर्यादा बताने के लिए बहुत बड़ी लड़ाई लड़ी। इस लड़ाई में बहुत से राक्षस मारे गए। रामचन्द्र जी महाराज अपनी पत्नी को वापिस अयोध्या ले आए।

द्वापर युग में कौरवों–पांडवों में जायदाद का झगड़ा था। कृष्ण जी ने दुर्योधन से कहा, ''आप लोगों के पास हिन्दुस्तान का बहुत बड़ा इलाका है। आप मेरे कहने पर पांडवों को पाँच गाँव दे दें ये आपसे जायदाद में और कुछ नहीं मांगेंगे।'' दुर्योधन ने कहा, ''आप पाँच गाँव देने की बात करते हैं मैं तो इन्हें सुई की नोक जितनी भी जगह देने के लिए तैयार नहीं।'' उस धरती के लिए महाभारत का इतना बड़ा युद्ध हुआ। उस युद्ध में हिन्दुस्तान की कमर टूट गई जो अभी तक वैसी मजबूत नहीं हो सकी। उस युद्ध में जायदाद के लिए बहुत कत्लोगारत हुई।

कबीर साहब इस छोटे से शब्द में सन्तमत को खोलकर समझाएंगे कि सन्तों ने अपनी ज़िंदगी में क्या किया होता है वे हमसे क्या करवाना चाहते हैं? सन्त अपनी ज़िंदगी में किस दुश्मन से लड़ाई लड़ते हैं और कैसे जीत प्राप्त करते हैं? गौर से शब्द को सुनें:

किउ लीजै गढु बंका भाई। दोवर कोट अरु तेवर खाई।।

आप कहते हैं, ''यह शरीर एक किला है। इसकी दोहरी दीवार है और तीनों तरफ खाईयां हैं; इसमें कैसे दाखिल हो सकते हैं?'' पटियाला में एक मुबारक किला है जिसकी दोहरी दीवारें हैं। पुराने जमाने में आमतौर पर किले दोहरी दीवारों वाले हुआ करते थे। जब तक दुश्मन एक दीवार तोड़े दूसरी दीवार को तोड़ने से पहले ही इंतजाम हो जाता था। इन किलों के तीनों तरफ खाईयां होती थी और बीच में एक दरवाज़ा रखा जाता था।

इसी तरह हमारे इस किले की दोहरी दीवारें राग और द्वैत हैं; जिन लोगों ने सघर्ष किया है वे जानते हैं कि राग और द्वैत की दीवारें कितनी मजबूत होती हैं। सतोगुण, रजोगुण और तमोगुण ये तीन खाईयां हैं; इन्हें पार करना किसी बहादुर का ही काम है। इन तीनों गुणों ने ब्रह्मा, विष्णु और शिव को अपने काबू में किया हुआ है। कबीर साहब कहते हैं:

सर्पनी से ऊपर नहीं बलुआ, जिन ब्रह्मा, विष्णु, महादेव छलिआ।

मैं बताया करता हूँ एक इंसान ने भौगोलिक विधा पढ़ी है वह नक्शा देखकर बता देता है कौन सा देश कहाँ है और उसकी आबादी कितनी है? किस जगह सड़क है किस जगह नहर है कौन सा रास्ता कहाँ जाता है?

तू कहता है पुस्तक देखी, हम कहते हैं आँखों देखी।

एक इंसान ने खुद जाकर अपनी आँखों से सारे मुल्क देखे हैं। वह बता सकता है कि किस जगह जंगल है, किस जगह पहाड़ है, किस जगह पानी है। हम सोच सकते हैं कि उन दोनों में से कौन सा इंसान सच्चा है?

पांच पचीस मोह मद मतसर आडी परबल माइआ।

इस किले में काल की पाँच शूरवीर मजबूत फौजें – *काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार* रह रही हैं। इन पाँचों के आगे ऋषि–मुनि भी हार गए। जो अंदर जाते हैं वे जानते हैं कि पच्चीस प्रकृतियों की कितनी शक्ति है। ये प्रकृतियाँ इंसान को खिलौने की तरह बना देती हैं। मन, माया का सहारा लेकर आत्मा को अंदर नहीं जाने देता।

जन गरीब को जोरु न पहुचै कहा करउ रघुराइआ।।

कबीर साहब अपने गुरु के आगे फरियाद करते हुए कहते हैं, ''हे रघुराय! मैं गरीब तेरे द्वारे पर आया हूँ। ये ताकतें अंदर हैं और मैं बहुत कमजोर हूँ अगर मेरे सिर पर तेरा हाथ नहीं होगा तो मैं इन ताकतों से कैसे लडूंगा?'' यह लड़ाई गुरु नानकदेव जी ने भी लड़ी है। आप कहते हैं:

मैं ते पंज जवान जिओ, गुरु थापी दित्ती कंड जिओ।

काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार ये पाँचों महाबलि हैं; मेरी आत्मा अकेली है। मेरे सिर पर मेरा सूरमा गुरु है उसने मेरी पीठ पर हाथ रखकर मुझे इन पाँचों के साथ लड़वाकर मेरी फतह करवाई।

काम किवारी दुखु सुखु दरवानी पापु पुंनु दरवाजा।।

आप प्यार से कहते हैं कि इस किले के पहरेदार दो दरवाजे – पाप और पुण्य हैं। जीव जिस तरफ भी लगे ये उसी तरफ लगा देते हैं। पुराने जमाने में आमतौर पर किले के अंदर खिड़की रखी जाती थी। वहाँ संतरी सख्त पहरा दिया करते थे। हमने उस खिड़की से अंदर जाना है। हममें से बहुत लोग पाप छोड़कर पुण्य करने लग जाते हैं। सोचते हैं! पुण्य करने से हमारा उद्धार हो जाएगा। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

दे दे मंगे सहसा गुणा, सोभ करे संसार।

अगर हम चार पैसे दान कर दें तो परमात्मा से हजारों गुणा मुआवजा माँगते हैं। यह भी चाहते हैं कि संसार हमारी प्रशंसा करे। मंदिरों–मस्जिदों में अपने नाम के पत्थर लगवाते हैं। पुत्र–पौत्रों को भी बताकर जाते हैं कि इस मंदिर का यह कमरा मैंने बनवाया है। यहाँ कुआँ मैंने लगवाया है। इस तरह हम अपना दान बेकार कर जाते हैं। कबीर साहब कहते हैं:

किया कराया सब गया, जब आया अहंकार।

क्रोध प्रधानु महा बड दुंदर तह मनु मावासी राजा।।

जब हम इस दरवाजे से थोड़ा सा अंदर जाते हैं तो हमें पाँचों महाबलियों का बादशाह मन और सेनापति क्रोध मिलता है। वहाँ पहुँचते ही क्रोध अंधेरा कर देता है ताकि हमें कुछ भी दिखाई न दे। सन्त हमेशा ही हमें इस ताकत से बचने का उपदेश करते हैं क्योंकि क्रोध हमारा सब कुछ लूट लेता है। क्रोध के कारण हमारे ख्याल फैल जाते हैं। क्रोध से आत्मा धुंधली हो जाती है और काम से नीचे गिर जाती है।

जिसे क्रोध की शिकायत है वह अपना खून टेस्ट करवाए! क्रोधी का ब्लड प्रेशर हाई होता है। उसके शरीर पर फोड़े–फुन्सियाँ निकल आती हैं।

कईयों को तो बुखार भी हो जाता है। एक प्रेमी ने तो अपना तर्जुबा यहाँ तक बताया कि वह आठ पहर बेसुरत रहता है। कबीर साहब कहते हैं:

कामी क्रोधी लालची इनसे भक्ति न होय,
भक्ति करे कोई सूरमा जात वर्ण कुल खोय।

स्वाद सनाह टोपु ममता को कुबुधि कमान चढ़ाई।।

सन्त हमेशा ही उपदेश देते हैं कि आपके अंदर आपका दुश्मन मन बैठा है। कृष्ण ने अर्जुन से बार–बार यही कहा, ''हे पार्थ! अपने मन को जीत।'' गुरु गोविंद सिंह जी ने बन्दा बहादुर को यही उपदेश दिया था, ''अपने मन को जीतो, हम अपना मन जीत लेंगे तो दुनियां के बनाने वाले परमात्मा को जीत लेंगे।'' जपजी साहब में आता है:

मन के जीते जीत है, मन के हारे हार।

हमारे सतगुरु महाराज सावन सिंह जी यह उदाहरण देकर समझाया करते थे कि रामचन्द्र जी महाराज के गुरु वशिष्ठ थे। वशिष्ठ जी ने कहा, ''रामचन्द्र! अगर कोई यह कहे कि एक ऐसा बहादुर पैदा हुआ है जिसने सैंकड़ो मील लम्बा हिमालय हाथ पर उठा लिया है बेशक यह मानने वाली बात नहीं है फिर भी मान लेते हैं कि शायद परमात्मा ने कोई ऐसा आदमी पैदा कर दिया हो! आपने फिर कहा कि कोई ऐसा शक्तिशाली आदमी है जिसने समुद्र पी लिया है बेशक यह मानने वाली बात नहीं फिर भी मान लेते हैं! अगर कोई यह कहे कि मैंने मन को जीत लिया है, अपने वश में कर लिया है तो हम यह मानने के लिए तैयार नहीं।''

आप यह भी कहा करते थे, ''ऐसा नहीं कि आज तक किसी ने मन को जीता ही नहीं। महात्मा मन को शब्द–नाम की दवाई से जीतते हैं।'' कबीर साहब कहते हैं, ''मन एक चंचल घोड़ा है, इसने इस रास्ते पर चलने वाले अनेकों सवारों को पटककर जमीन पर गिरा दिया है।''

आप प्यार से समझाते हैं कि इस किले मे दाखिल होने पर क्या मिलता है? किले में खान–पान की सब चीजें होती हैं।

मैं आमतौर पर सतसंग में एक कहानी सुनाया करता हूँ। एक राजा की एक लड़की थी। राजा ने शर्त रखी कि जो नौजवान शाम होने से पहले मुझे ढूंढ लेगा मैं उसकी शादी अपनी लड़की के साथ कर दूँगा और अपना राजपाट भी उसे दे दूँगा। राजा भेष बदलकर किसी बाग में छिपकर बैठ गया। नौजवानों ने सोचा कि राजा को ढूंढना क्या मुश्किल है? लड़की के साथ शादी हो जाएगी और राजपाट भी मिलेगा।

राजा ने रास्ते में अच्छे–अच्छे खाने, राग–रंग, मुजरे और अच्छे–अच्छे वस्त्र सजवा दिए। नौजवान रास्ते में उन खानों और मुजरों पर ही मस्त हो गए, राजा को ढूंढना ही भूल गए। रविदास जी कहते हैं:

मृग भृंग मीन कुंचर एक दोख विनाश,
पंच दोख असाध जामें ताँकी के तक बात।

पशु–पक्षी एक दोष के कारण नहीं बचते। पतंगा रोशनी का आशिक है वह रोशनी पर जाकर जल जाता है। वह नहीं जानता कि मैं रोशनी से प्यार करने पर मर जाऊंगा। वह एक दोष की वजह से मारा गया।

हिरण को राग सुनने का दोष है। शिकारी लोग जंगल में जाकर 'कंडा–हेड़ी' राग बजाते हैं। हिरण इंसान को देखकर भाग जाता है लेकिन राग के दोष की वजह से वह अपना सिर शिकारी की गोद में रख देता है। वह राग के दोष की वजह से मारा गया और उसे हांडियों में चढ़ना पड़ा।

भँवरे को खुशबू लेने का दोष है। वह फूलों की खुशबू लेते हुए भूल जाता है कि दिन छिपने वाला है। फूल में बंद होकर सारी रात फूल में कैद रहता है; दम तोड़ देता है। भँवरा अपने इस दोष के कारण मारा जाता है।

हाथी को काम का दोष है। हाथी को पकड़ने वाले जंगल में जाकर बहुत बड़ा गड्ढा खोद लेते हैं उस पर घास–फूँस की छत डाल देते हैं; उसके ऊपर कागज की हथनी बनाकर खड़ी कर देते हैं। हाथी काम के जोश में जैसे ही वहाँ पैर रखता है गड्ढे में गिर जाता है। वह वहाँ कई दिन भूखा रहता है; महावतों के अंकुश सहता है। हाथी इस एक दोष की वजह से सारी जिंदगी दुख सहता है।

महात्मा रविदास जी हमें समझाते हैं, ''एक दोष वाले पशु–पक्षी नहीं बचते, इंसान में तो पाँच दोष हैं। क्या इंसान ने कभी अपने अंदर झाँककर देखा?'' हम लोगों को बताते हैं कि हम बहुत नेक–पाक हैं गुरु के शिष्य हैं।

गुरु गोविंद सिंह जी कहते हैं, ''वही शिष्य है, वही खालसा है जो इन पाँच विषयों से बचा हुआ है। अंदर जाकर ज्योत के दर्शन करता है।'' जब जीव अंदर जाता है तब काल खोटी बुद्धि का बांण मारता है। बड़े–बड़ो की बुद्धि चकरा जाती है। जीव कहता है कि सिमरन जुबान पर आता ही नहीं।

आमतौर पर हम साधुओं के पास यही आशाएं लेकर जाते हैं कि हमारी बीमारी दूर हो जाए! बेरोजगारी दूर हो जाए! हम मुकद्मा जीत जाएं! हमारे घर में संतान पैदा हो जाए! आशाएं तो ऐसी भी है जिन्हें सुनकर हँसी आती है। घर में बच्चा रोने लग जाए तो हम बहुत पैसे खर्च करके सन्तों के पास जाकर कहते हैं, ''महाराज जी! बच्चा रोता है।'' क्या आप बच्चे की जरूरत घर पर पूरी नहीं कर सकते?

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''ऐसे लोग सन्तमत से क्या लाभ उठा लेंगे इससे तो यही अच्छा था कि वे सन्तमत में न आते।'' सन्तों के पास 'नाम' है। नाम आत्मा का उद्धार करता है ताकि हम फिर इस दुखी संसार में न आएं। जिस दुकान पर हीरे–मोती हैं अगर आप उस दुकान पर जाकर दुकानदार से कोयले माँगे तो वह कहाँ से देगा?

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे कि भेड़ों के बाड़े को आग लग जाती है तो लोग तरस खाकर उनको वहाँ से निकालते हैं लेकिन भेड़ें फिर भी उसी तरफ जाती है। सन्त हमें इन बीमारियों से निकालने के लिए आते हैं लेकिन हम कहते हैं कि हमें इन्हीं में फँसे रहने दें।

तिसना तीर रहे घट भीतर इउ गढु लीओ न जाई।।

तृष्णा का तीर बहुत तीखा है, अंदर जाते ही यह तीर घायल कर देता है इसलिए हम इस किले को फतह नहीं कर पाते। हम महात्मा की संगत में जाकर भी फायदा नहीं उठा पाते।

एक आदमी महात्मा की सेवा करता था। उसने महात्मा से कहा, ''हमारे घर में बहुत समस्याएं हैं माया की कमी है आप हम पर दया–मेहर करें।'' महात्मा ने सोचा कि यह मेरा सेवक है बहुत समय से मेरे पास आ रहा है। महात्मा ने उसे चार मोमबत्तियाँ देकर कहा, ''एक मोमबत्ती जलाकर एक दिशा में जाना है जहाँ मोमबत्ती बुझ जाए वहाँ पर जमीन खोदनी है जो तेरी प्रालब्ध में होगा तुझे मिल जाएगा लेकिन दूसरी दिशा में मत जाना।''

वह सेवक घर से निकलकर एक दिशा में गया जहाँ मोमबत्ती बुझी उसने वहाँ जमीन खोदी तो उसे पैसे मिले। उसने खुश होकर पैसों की गाँठ बाँध ली और घर आ गया। उसके दिल में ख्याल आया! एक दिशा से इतना कुछ मिला है, अब दूसरी दिशा में जाकर भी देखा जाए। जहाँ मोमबत्ती बुझी उसने जमीन खोदी वहाँ उसे रूपये मिले। वह रूपये लेकर घर आ गया।

फिर उसके दिल में ख्याल आया कि तीसरी दिशा में जाकर देखने में क्या हर्ज है? महात्मा तो कहा ही करते हैं। आगे जाकर जहाँ मोमबत्ती बुझी उसने जमीन खोदी, वहाँ से उसे मोहरे मिलीं। वह बहुत खुश हुआ और मोहरें लेकर घर आ गया।

फिर उसने सोचा कि महात्मा बहुत अच्छे हैं। उन्होंने मना तो किया था लेकिन फिर भी चौथी दिशा में जाकर देखना चाहिए कि वहाँ क्या है? जहाँ मोमबत्ती बुझी उसने जगह खोदी वहाँ एक दरवाजा था। वह दरवाजे से अंदर गया तो वहाँ उसे एक मकान दिखाई दिया जिसमें एक घबराया हुआ आदमी चक्की पीस रहा था उसके सिर पर छत का वजन था।

उसने घबराए हुए आदमी से पूछा, ''जिस कुबेर धन का शास्त्रों में जिक्र है क्या वह धन यहीं है?'' घबराए हुए आदमी ने कहा, ''मेरे सिर पर छत का वजन है अगर तू थोड़ी देर यह वजन अपने सिर पर उठा ले तो मैं फारिग होकर तुझे बता सकता हूँ।''

तृष्णा से भरा हुआ लालची इंसान क्या नहीं करता? जैसे ही उसने अपना सिर नीचे करके चक्की पर हाथ लगाया छत का सारा वजन उसके ऊपर आ गया। घबराए हुए आदमी ने कहा, ''मुझे भी ऐसा ही तृष्णा का तीर लगा था। अब तेरे जैसा कोई और तृष्णालु यहाँ आएगा वही तुझे छुड़वाएगा, तब तक तू यहाँ चक्की पीस।''

प्रेम पलीता सुरति हवाई गोला गिआनु चलाइआ।।

कबीर साहब कहते हैं कि मैंने इस किले को इस तरह फतह किया जिस तरह पहाड़ो को तोड़ने वाले पहाड़ की जड़ में बारूद का पलीता रख देते हैं। कनेक्शन करते ही बड़े से बड़ा पहाड़ फट जाता है। अंदर तो कोई पलीता नहीं जाता। मैंने गुरु का दिया हुआ प्रेम–पलीता लिया उसकी सुरत को हवाई जहाज बनाकर उस पर सवार हुआ। आसमान में 'शब्द–नाम' का गोला चलाया। मैंने अपनी आँखो से देखा कि *काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार* की फौजें लूली–लंगड़ी हो गई। मैं बताया करता हूँ कि सुरत की चढ़ाई इतनी तेज होती है जैसे राइफल की गोली की आवाज़ बाद में होती है लेकिन वह पहले निशाने पर जा बजती है।

गुरु गोविंद सिंह जी कहते हैं, ''जो परमात्मा को पाना चाहता है वह अपने अंदर प्रेम पैदा करे। हमारे दिल में किसी के लिए दर्द नहीं है इसलिए हम आपस में लड़ते हैं।''

फरीद साहब कहते हैं, ''अगर आप परमात्मा से मिलना चाहते हैं तो किसी का दिल न दुखाएं। किसी का दिल दुखाने से बड़ा कोई गुनाह नहीं। किसी के दिल की खुशी ले लेनी बहुत बड़ा पुण्य है।''

ब्रह्म अगनि सहजे परजाली एकहि चोट सिझाइआ।।
सतु संतोखु लै लरने लागा तोरे दुइ दरवाजा।।

आर्मी की ट्रेनिंग करने वाले जानते हैं कि हवाई जहाज और तोपें किसी मुल्क पर जीत प्राप्त नहीं कर सकते। हवाई जहाज और तोपें गोले ही फैंक सकते हैं जिससे कई बेकसूर मारे जाते हैं। आखिर मुठभेड़ से ही फतह होती है, आर्मी के अच्छे ट्रेंड जवान गुत्थम–गुत्थे में जीत जाते हैं।

कबीर साहब बताते हैं कि मैंने ऊपर जाकर 'शब्द' का गोला छोड़ा। मैंने दयाली शक्तियों – सत, संतोष, धीरज, विवेक और शील को अपने साथ लिया। इन दयाली शक्तियों को लेकर मैं उन विरोधी शक्तियों – *काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार* के साथ लड़ने लगा। सबसे पहले मैंने उस दरवाजे पर खड़े संतरियों – *पाप और पुण्य* को खत्म किया। संतरियों को काबू करने वाला ही आगे जा सकता है।

साध संगति अरु गुर की क्रिपा ते पकरिओ गढ को राजा।।

आप कहते हैं कि मैंने गुरु की कृपा और साधसंगत से इस किले पर फतह प्राप्त की, किले के राजा मन को पकड़कर अपने वश में कर लिया।

मैं जाणा मन मर गया, मर कर होया भूत,
मोया पिच्छो लंघ तुरया, ते ऐसा मेरा पूत।

मन पर ऐतबार करने वाले लोग भूले हुए हैं। मन ने ही सबको परेशान किया हुआ है। 'नाम' जपकर ही आप मन पर काबू पा सकेंगे।

भगवत भीरि सकति सिमरन की कटी काल भै फासी।।

आप कहते हैं, ''मेरे पास गुरु का दिया हुआ सिमरन था। महात्मा का सिमरन सुना–सुनाया नहीं होता। उस सिमरन के पीछे उनका तप–त्याग काम करता है अगर हम ईमानदारी और प्रेम प्यार से बिना बोझ समझे सिमरन करेंगे तो काल के फंदे खत्म हो जाएंगे।''

दासु कबीरु चड़िओ गढ़ ऊपरि राजु लीओ अबिनासी।।

कबीर साहब कहते हैं, ''मैंने अपने गुरु की दया से उनके दिए हुए सिमरन की शक्ति के साथ इस किले पर चढ़कर वह अविनाशी राज्य–*सच्चखंड* प्राप्त किया जिसका कभी नाश नहीं होता। हमारी आत्मा *सच्चखंड* से बिछुड़कर इस संसार में आई है।''

हम इतिहास में अरसतु को याद करते हैं। वह शाह सिकंदर का गुरु था। सिकंदर दुनियां का विजेता बनने का स्वप्न देख रहा था। सिकंदर के नाम से दुनियां काँपती थी। उसका नाम सुनकर लोग पहले ही हार मान लेते थे। जब सिकंदर ने रूस पर चढ़ाई की तो वहाँ के लोगों ने लड़ाई किए बिना ही अपनी हार मान ली कि अगर हम! सिकंदर के साथ तलवार की लड़ाई लड़ेंगे तो जीत नहीं पाएंगे।

वहाँ के लोगों ने एक मशहूर नर्तकी से कहा कि हम तुझे मुँह माँगा धन देंगे तू किसी भी तरह से सिकंदर को अपने वश में कर। उस नर्तकी ने कहा, ''यह मेरे लिए मामूली काम है।'' नर्तकी ने सिकंदर के पास जाकर कहा, ''मैंने सुना है आप बहुत बड़े विजेता हैं; आपकी तलवार की बहुत धाक है। आपकी तलवार के आगे कोई बादशाह नहीं टिक सकता। मैंने यह

भी सुना है कि आपको नृत्य देखने और गाना सुनने का भी शौंक है। क्या मैं सरकार का दिल खुश कर सकती हूँ?'' सिकंदर ने उसे इज़ाज़त दे दी।

वह नृतकी रोजाना सिकंदर के पास आकर नृत्य करने लगी। धीरे–धीरे सिकंदर उसके प्यार में मस्त होकर अपने आपको भूलने लगा।

सिकंदर के गुरु अरसतु ने देखा कि यह अपने आपको भूल गया है कि मैं पराए मुल्क में रह रहा हूँ। यह अपनी जीत को हार में बदल लेगा। अरसतु ने सोचा कि इस समय मेरा फर्ज बनता है कि मैं इसे समझाऊं।

अरसतु ने सिकंदर के पास जाकर कहा, ''मैं जानता हूँ कि तू बहुत बड़ा विजेता है लेकिन इस समय तू अपने दुश्मनों के घेरे में घिर चुका है।'' सिकंदर ने कहा, ''मुझे तो मेरा कोई दुश्मन नजर नहीं आ रहा।'' अरसतु ने कहा, ''बाहर के दुश्मनों को तो तू जीत चुका है लेकिन तेरा दुश्मन मन तेरे अंदर बैठा है; तेरे मन ने तुझे राग–रंग में फँसा लिया है। यह नर्तकी तुझे खत्म कर देगी।''

जब नर्तकी सिकंदर के पास आई तो उसने कहा, ''मेरे गुरु का हुक्म है मैं तेरा नृत्य नहीं देखूंगा, तुझे अपने पास नहीं आने दूंगा।'' नर्तकी ने कहा, ''सिकंदर! तुझे तो शायद मुझसे प्यार न हो लेकिन मैं तुझसे बहुत प्यार करती हूँ। तू एक बूढ़े का कहना मानकर मुझे छोड़ रहा है। इस बूढ़े ने अपनी सारी ज़िंदगी जंगलों मे गुजारी है।

इसे भोगों के सुख के बारे में क्या मालूम है अगर इसने ज़िंदगी में एक बार भी भोगों की लज्ज़त ली होती तो यह तुझे न रोकता।''

नर्तकी ने सिकंदर से कहा, ''मैं तेरे गुरु को गधा बनाकर उस पर सवार होकर सीटी बजाकर दिखाऊंगी।'' यह सुनकर सिकंदर को गुस्सा आया उसने तलवार पर हाथ रखकर कहा, ''तू मेरे सामने मेरे गुरु की निन्दा कर रही है।'' नर्तकी ने कहा, ''मैं निन्दा नहीं कर रही मैं तुझे ऐसा करके दिखाऊंगी इसकी शर्त क्या रखनी है?'' सिकंदर ने कहा, ''शर्त सिर की है अगर तूने ऐसा कर दिखाया तो मैं अपना सिर दे दूँगा अगर तू ऐसा न कर सकी तो तेरा सिर ले लूँगा।'' नर्तकी ने कहा, ''मंजूर है।''

नर्तकी ने अरसतु के मकान के पास जाकर रोना–चिल्लाना शुरू कर दिया और अपने कपड़े फाड़ दिए। अरसतु ने कहा, ''बेटी! यह सब क्या है?'' नर्तकी ने कहा, ''सिकंदर ने मेरी यह हालत कर दी है और अब मुझे अपने पास आने से मना कर दिया है। मेरा मन करता है कि मैं साधवी बन जाऊँ भक्ति करूँ लेकिन मुझे इस बात का भी डर है कि मैं जिस भी आश्रम में जाकर भक्ति करूंगी वहाँ भी लोग मुझे बुरी नजरों से देखेंगे क्योंकि मेरी उम्र ही ऐसी है। आप दया करें, मुझे अपने आश्रम में जगह दें।'' सन्त–महात्मा दया ही करते हैं।

महाराज सावन कहा करते थे, ''कई बार दया भी हमें धोखा दे जाती है दया करते हुए भी हमें सोचना पड़ता है।'' मैं कहा करता हूँ, ''दया करने से पहले एक बार नहीं हज़ार बार सोचें कि यह दया किस तरफ जाएगी।''

वह नर्तकी रोजाना आँखें बंद करती और माला फेरती। आप जानते हैं कि पाखंडी आदमी ज्यादा समय आँखें बंद करके बैठता है। पाखंडी आदमी सारी ज़िंदगी अपना सबूत देते–देते ही खत्म हो जाता है। जब अरसतु ने देखा कि यह तो बहुत भक्ति करती है शायद अंदर जाती हो।

अरसतु ने उससे कहा, ''तुमने बहुत जल्दी तरक्की कर ली है तुम्हारी सुरत अंदर जाने लगी है; अब तो खुश है। बेटी! माँग जो माँगना चाहती है।''

नर्तकी ने कहा, ''गुरुदेव! मैं आपसे क्या माँगू? सारी दुनियां धोखेबाज है मैंने जिससे भी प्यार किया उसने मुझे ठुकरा दिया।'' अरसतु ने कहा, ''बेटी! फकीर किसी को नहीं ठुकराते।'' नर्तकी ने कहा कि जब मैं छोटी बच्ची थी तब मेरे पिता जमीन पर आगे की तरफ हाथ–पैर रखकर मुझे अपनी पीठ पर बिठा लेते थे। आज मैं उस प्यार के लिए तरस रही हूँ, क्या कोई मुझे वैसा प्यार दे सकता है?

अरसतु ने कहा, ''बेटी! यह कौन सा मुश्किल है। तू जैसा कहे मैं कर लेता हूँ।'' नर्तकी ने सिकंदर को खबर भेज दी कि वह कल बाहर आकर खड़ा हो जाए; जब मैं सीटी बजाऊँगी तो अंदर आ जाए। सिकंदर तलवार लेकर गया कि आज नर्तकी का सिर काटना ही है।

नर्तकी ने अरसतु से कहा, ''पिता जी! आज अपना वायदा पूरा करें।'' अरसतु वैसे ही अपने हाथ–पैर जमीन पर लगाकर जानवर की तरह खड़ा हो गया। नर्तकी ने उस पर बैठकर सीटी बजाई। सिकंदर अंदर आकर आँखें मलता है कि मैं स्वप्न तो नहीं देख रहा? आखिर सिकंदर ने अपने गुरु अरसतु से कहा, ''गुरुदेव! मैं जो कुछ देख रहा हूँ क्या यह सच है?''

अरसतु ने कहा, ''सिकंदर! यह सब कुछ सच है। ये लोग बड़े–बड़े ज्ञानियों और पढ़े–लिखों की बुद्धि भ्रष्ट कर देते हैं। चाहे यह बेटी बनकर मेरे ऊपर चढ़ी अगर तू मेरी बात न मानता तो कैसे बचता?''

कबीर साहब कहते हैं कि मैंने गुरु के दिए हुए प्रेम–पलीते से इस अविनाशी राज्य को प्राप्त किया है। सन्त–महात्मा अपनी ज़िंदगी में इन पाँचों डाकुओं को जीतने के लिए संघर्ष करते हैं। वे हमें मन के दाव–पेचों से कामयाब होने का संदेश देते हैं अगर हम ऐसा करें तो कामयाब हो जाएं।

♠♠♠

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

मालिक की मौज

साँपला

एक प्रेमी : महाराज कृपाल के कुछ सतसंगियों को उत्तराधिकारी तलाश करने की इच्छा नहीं है और कुछ ऐसे हैं कि वे जब तक उत्तराधिकारी को ढूंढ नहीं लेते उन्हें शांति नहीं मिलती?

बाबा जी : परम पिता परमात्मा सावन–कृपाल के चरणों में नमस्कार है जिन्होंने हमारे ऊपर अपार दया की और अपनी याद में बैठने व यश गाने का मौका दिया।

प्यारयो! मैंने सदा सतसंगों में कहा है और परम सन्तों की लेखनियों को पढ़ने से हमें पता चलता है कि हर आत्मा का अपना–अपना नज़रिया होता है। हर आत्मा के अपने–अपने कर्म होते हैं और उसके कर्मों के मुताबिक ही उसके जीवन के हर दिन का कार्यक्रम बनाया जाता है।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''हर इंसान अपनी तकदीर में छः चीज़ें – *अमीरी–गरीबी, तंदरूस्ती–बीमारी, सुख–दुःख* लिखवाकर लाता है। हमारे जीवन में हर घटना समय पर आकर घटती है उस घटना का समय निश्चित होता है। हम अज्ञानी हैं हम नहीं जानते कि हमारे जीवन में यह घटना क्यों घटी है? इसलिए हम घबरा जाते हैं क्योंकि जो कुछ हमारे जीवन में घटना है वह पहले से ही तय होता है यह हमारे पूर्व जन्म के कर्मों के अनुसार ही होता है।''

हम देखते हैं कि हमारे जीवन में जो घटनाएं घटती है वे **मालिक की मौज** में ही घटती हैं। हर इंसान के लिए यह तय होता है कि वह

अपने जीवन में पूर्ण सतगुरु के पास जाएगा या नहीं? पूर्ण सतगुरु के पास जाकर वह उससे 'नाम' लेगा या नहीं? उसे सतगुरु पर भरोसा आएगा या नहीं? यह सब पहले से ही तय होता है। चाहे सतगुरु पड़ोस में ही रहना शुरू कर दें अगर हमारी तकदीर में नहीं लिखा तो हम उससे कोई फायदा नहीं उठा सकते।

मैं आपको गुरु नानक साहब और बाबा बुढ़ा की कहानी सुनाऊंगा। एक बार गुरु नानक साहब बाला और मर्दाना के साथ जा रहे थे, उस समय आने–जाने के साधन नहीं थे पैदल ही यात्रा करनी पड़ती थी। इस तरह एक बार आप पैदल चलते हुए जंगल में ऐसी जगह पर आ गए जहाँ बाबा बुढ़ा पशु चराया करता था।

बाबा बुढ़ा जिसका बचपन में नाम बुधा था। वह गुरु नानकदेव जी के पास आया। उसने सोचा! गुरु नानकदेव जी कोई साधु पुरुष हैं। बाबा बुढ़ा ने गुरु नानकदेव जी से विनती की अगर आप मुझे आज्ञा दें तो मैं आपके लिए अपनी बकरियों का दूध ले आऊं या अपने घर से आपके लिए कोई चीज़ ले लाऊं। जब गुरु नानकदेव जी ने उसको ऐसी समझदार बातें करते सुना तो आपने कहा, ''तुम बहुत छोटी उम्र के हो लेकिन बूढ़े आदमी की तरह बातें करते हो।'' तब गुरु नानक साहब ने उसका नाम बाबा बुढ़ा रख दिया।

बाबा बुढ़ा को बहुत लम्बा जीवन भोगने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। वह हर उत्तराधिकारी के माथे पर तिलक की रस्म किया करता था। उसने यह रस्म सिक्खों के छठे गुरु तक निभायी। जब गुरु नानकदेव जी ने चोला छोड़ा तब आपके बहुत से शिष्यों को आपके उत्तराधिकारी की तलाश करने में कोई रूचि नहीं थी लेकिन बाबा बुढ़ा ही एक ऐसा आदमी था जिसने सदा उत्तराधिकारी को पहचाना।

भाई लेहणा जिस गाँव में रहते थे, उस गाँव के लोग ज्वाला देवी की पूजा किया करते थे। भाई लेहणा भी ज्वाला देवी के पक्के भक्त थे। एक बार भाई लेहणा का मिलाप गुरु नानकदेव जी के एक सतसंगी के साथ हुआ। उस सतसंगी ने गुरु की महानता के बारे में बताया अगर कोई व्यक्ति गुरु की पूजा करता है और पूर्ण गुरु से 'नाम' लेकर भजन–अभ्यास करता है तो उसमें सभी देवी–देवताओं की पूजा आ जाती है। पूर्ण सतगुरु के सामने देवी–देवता कुछ नहीं हैं। सतगुरु 'शब्द–नाम' का अवतार होता है।

एक बार भाई लेहणा ज्वाला देवी के मंदिर की यात्रा करने जा रहा था। वह रास्ते में करतारपुर से गुजरा जहाँ गुरु नानक साहब रहते थे। भाई लेहणा ने सोचा! मंदिर जाने से पहले मुझे गुरु नानकदेव जी के दर्शन कर लेने चाहिए। जब भाई लेहणा ने गुरु नानकदेव जी के दर्शन किए तो वह आपकी एक झलक पाकर ही चकित हो गया। वह इतना प्रभावित हुआ कि उसने सोचा यह वही जगह है जहाँ उसे होना चाहिए था। वह देवी के दर्शनों के लिए नहीं गया।

गुरु नानकदेव जी ने उसका नाम पूछा। उसने कहा, ''मेरा नाम लेहणा है।'' गुरु नानकदेव जी ने कहा, ''तुमने लेना है और मैंने तुम्हें देना है।'' गुरु नानकदेव ने उसे जो सेवा दी उसने वह सेवा सदा प्रेम और लग्न से की। उसकी भक्ति देखकर गुरु नानकदेव जी ने उससे कहा, ''मैं तुम्हारी सेवा से बहुत खुश हूँ। मैं तुम्हें अपने शरीर का अंग बनाऊंगा।'' उसके बाद गुरु नानकदेव जी ने उनका नाम अंगद रखा। इस तरह वह भाई लेहणा से गुरु अंगद बने।

पूर्ण सतगुरु भविष्य में होने वाली घटनाओं के बारे में जानते हैं। गुरु नानकदेव जी भी जानते थे कि जब वह चोला छोड़ देगें तो उनके

परिवार वाले, उनके बेटे व अन्य लोग गुरु अंगद की कद्र नहीं करेंगे इसलिए उन्होंने चोला छोड़ने से पहले गुरु अंगद को अपने गाँव जाने के लिए कहा। गुरु अंगद वापिस अपने गाँव आ गए।

यह सदा से ही होता आया है कि कुछ लोग उत्तराधिकारी के पास जाते है और कुछ लोग नहीं जाते। कुछ भाग्यशाली आत्माएं जब तक पूर्ण गुरु के उत्तराधिकारी को ढूंढ न लें उन्हें शांति नहीं मिलती लेकिन बहुत से ऐसे भी होते हैं जिनमें पूर्ण सतगुरु के उत्तराधिकारी को खोजने की इच्छा नहीं होती, यह उनकी तकदीर के अनुसार ही होता है। जिनके मस्तक में लिखा होता है वे उत्तराधिकारी के पास जाते हैं बाकी लोग इधर–उधर ही भटकते रहते है।

गुरु नानकदेव जी के बेटे श्री चन्द ने गुरु नानकदेव जी से 'नाम दान' नहीं लिया था। श्री चन्द ने अविनाशी मुनी से 'नाम' लिया था। उसके पास 'दो–शब्द' का भेद था और वह उदासी मत से सम्बन्ध रखता था। श्री चन्द ने भी गद्दी चलाई उसने भी गुरु अंगद के बराबर पंथ चलाया जबकि उसे गुरु नानकदेव जी से नाम नहीं था।

बाबा अमोलक दास ने श्री चन्द से 'नाम' लिया था। मुझे बाबा अमोलक दास का धुंधला सा चेहरा याद है। मुझे उनकी सेवा करने का मौका मिला था। मैं उन्हें पीने के लिये दूध दिया करता था। बिशनदास जी ने बाबा अमोलक दास जी से 'दो–शब्द' का भेद लिया था। उसी क्रम में मैं 'दो–शब्द' का भेद लेने वाला तीसरा आदमी हूँ।

प्यारयो! मैं आपको श्री चन्द के बारे में किसी किताब से पढ़कर नहीं बता रहा हूँ, मैंने जो कुछ आमने–सामने देखा है, वही बता रहा हूँ। बाबा अमोलक दास ने केवल दो ही लोगों बिशन दास और पटियाला के राजा भूपिन्द्र सिंह को नामदान दिया था।

बाबा अमोलक दास के आशीर्वाद से हीरा सिंह ने नाभा का राज्य प्राप्त किया। बाबा अमोलक दास जिस गाँव में रहते थे वह बड़ूखियां गाँव नाभा रियासत के बीच में था। हीरा सिंह बहुत गरीब आदमी था। उसके पास एक ऊँट गाड़ी थी वह उस गाड़ी पर सामान लादकर बेरूकी गाँव से नाभा ले जाया करता था। वह एक प्रेमी भक्त था वह नाभा जाते हुए और आते हुए बाबा अमोलक दास जी को माथा टेकता था, ऐसा काफी समय तक चलता रहा।

एक दिन बाबा अमोलक दास ने हीरा सिंह से कहा, ''हीरा सिंह कुछ माँगना चाहते हो माँगो।'' हीरा सिंह ने जवाब दिया, ''मेरे पास सब कुछ है, आपने मुझे सब कुछ दिया है।'' बाबा अमोलक दास ने फिर कहा, ''तुम जो माँगोगे तुम्हें दिया जाएगा।'' फिर भी हीरा सिंह ने वही कहा। इस तरह हीरा सिंह ने तीन बार कहा कि उसके पास सब कुछ है और वह सन्तुष्ट है लेकिन जब सन्त–सतगुरु की मौज होती है और वह सेवक को कुछ देना चाहते हैं तो वे उसे जरूर देते हैं। बाबा अमोलक दास ने कहा, ''तुम्हें नाभा का राजा बना दें?''

जब सतगुरु वरदान दे रहे होते हैं, अपनी दया कर रहे होते हैं तो आसपास के लोग उनका विश्वास नहीं करते। लोग सोचते हैं! ये ऐसे ही कह रहे हैं; इस बात की कोई कीमत नहीं हैं। जब आसपास के लोगों ने सुना कि बाबा अमोलक दास यह कह रहे हैं कि मैं तुम्हें नाभा का राजा बनांऊगा। उसके बाद हीरा सिंह के दोस्त उसका मजाक उड़ाने लगे। वे बाजार में हीरा सिंह से सदा यह कहते, ''आओ! हम लोग नाभा के राजा की ऊँटगाड़ी में सामान लादें।''

जब नाभा के राजा भगवान सिंह ने चोला छोड़ा उसका कोई बेटा नहीं था, उसका कोई उत्तराधिकारी नहीं था।

उस समय भारत पर ब्रिटिश सरकार का राज्य था अगर किसी राजा का उत्तराधिकारी नहीं होता था तो वे लोग उसके नज़दीक के रिश्तेदार को ढूंढने की कोशिश करते थे। हरिद्वार में मरे हुए व्यक्ति के फूल लेकर जाते हैं, वहाँ के पंडे मरे हुए व्यक्ति के पूर्वजों का सारा विवरण रखते हैं।

ब्रिटिश सरकार को हरिद्वार से पता चला कि हीरासिंह राजा भगवान सिंह का सबसे नज़दीकी रिश्तेदार है। इस कारण ब्रिटिश सरकार ने हीरा सिंह को नाभा रियासत का राजा बनाया। यह भी सच है कि हीरा सिंह बिलकुल अनपढ़ था, वह हस्ताक्षर करना भी नहीं जानता था लेकिन वह भारत की सभी रियासतों का मुखिया बना।

मैंने भाई गुरदास की बाणी पर कई सतसंग दिए हैं लेकिन समय की कमी के कारण सन्त बानी आश्रम उन्हें प्रकाशित नहीं कर सका। आपको उन सतसंगों में ऐसे सवालों के जवाब मिलेंगे। भाई गुरदास, गुरु अर्जुनदेव जी के चाचा थे। भाई गुरदास जी तीन गुरुओं, गुरु रामदास, गुरु अर्जुनदेव और गुरु हरगोबिन्द के समय में रहे। भाई गुरदास ने गुरु हरगोबिन्द के समय में चोला छोड़ा। आप भी बाबा बुढ़ा की तरह थे।

जो अंदर जाते हैं भजन–अभ्यास करते हैं वे जानते हैं कि ज्योति कहाँ कार्य कर रही है। इस तरह जब गुरु रामदास जी ने चोला छोड़ा तब भी उत्तराधिकारी का विवाद हुआ। गुरु रामदास जी के पुत्रों के बीच झगड़ा हुआ। उस समय भाई गुरदास और बाबा बुढ़ा ने ही उत्तराधिकारी की समस्या को हल किया।

प्यारयो! बहुत से लोग पार्टियाँ बनाने में लग जाते हैं, मैं–मेरी के चक्कर में फँस जाते हें। सभी गुरुओं ने कहा है कि सच्चाई का कभी

नाश नहीं होता, कुछ लोग सच्चाई को पहचान लेते हैं। महाराज कृपाल अक्सर कहा करते थे, ''जैसे एक बल्ब फ्यूज हो जाने पर दूसरा बल्ब उसकी जगह ले लेता है लेकिन प्रकाश एक ही होता है।''

एक प्रेमी : सन्तजी! रसल परकिन्स ने एक सन्तबानी पत्रिका में बताया कि 77 आर.बी आश्रम में आपने उसे मई 1976 में अकेले भजन–अभ्यास में बिठाया। उस समय रसल ने जो दर्द महसूस किया उसका जिक्र किया हुआ है कि वह किस तरह बिना हिले–डुले सीधे बैठकर अपना ध्यान एकत्रित कर सका। उस समय आपने रसल को यह बताया था अगर वह दस से पन्द्रह दिनों तक बिना हिले डुले पूरी तरह से सीधा बैठकर अभ्यास करेगा तो उसे दर्द की कोई समस्या नहीं होगी, अभ्यास में नींद नहीं आएगी और रुहानी चढ़ाई होगी।

हम आपसे प्रार्थना करते हैं कि आप इस बारे में हमें कुछ बताएं जोकि हममें से बहुत से प्रेमियों को खासकर मुझे भी दर्द का मुकाबला करने में मददगार हो। हमें भजन–अभ्यास में नींद न आए और हम अंदर ज्यादा से ज्यादा तरक्की कर सकें?

बाबा जी: मैं उस समय के बारे में आप लोगों को क्या बताऊँ? उस समय मैं बहुत उदास और व्याकुल था। मैं चौबीस घंटे में एक बार बाहर आता था। जब रसल से मेरी पहली मुलाकात हुई उस मुलाकात में मैंने उसे डाँटा और कुछ रूखे शब्दों का इस्तेमाल भी किया अगर रसल के अंदर जरा भी कमजोरी होती तो वह मेरे पास वापस नहीं लौटता क्योंकि वह जान चुका था कि सन्त जी किसी से नहीं मिलते और किसी को अपने यहाँ आने की इज़ाज़त नहीं देते।

श्री गंगानगर से उसे यह सूचना मिली थी कि सन्त जी किसी से नहीं मिलते। वहाँ के लोगों ने रसल को बताया कि सन्त जी के पास

जाने का कोई फायदा नहीं होगा लेकिन उसका प्रेम और भक्तिभाव देखकर ग्रुप लीडर जंगीर सिंह ने अपने बेटे को रसल के साथ भेजा ताकि वह मुझसे मिलने आ सके।

जब रसल आया तो उस समय जो सेवादार मेरे साथ रहा करता था उसने कभी किसी पश्चिमी प्रेमी को नहीं देखा था। वह इतना घबराया कि ऊपर आकर उसने मुझे बताया अंग्रेज आएं हैं। मैंने उससे कहा, ''चिन्ता मत करो, जाकर उन्हें बिठाओ मैं थोड़ी देर में उन्हें बुला लूंगा।'' जब मैं इन लोगों से मिला तो ये लोग घबराए हुए थे। कुलवन्त रसल के साथ था। जब मैंने कुलवन्त से सबका परिचय करवाने के लिए कहा तो कुलवन्त ने घबराहट में अपनी पत्नी लिंडा को रसल की पत्नी बताया।

प्यारयो! अगर कोई व्यक्ति जिद् करके और भक्तिभाव से सतगुरु के दरवाजे पर बैठता है तो सतगुरु को भी उसे कुछ देना पड़ता है। रसल जो कुछ प्राप्त करना चाहता था उसने प्राप्त किया।

महाराज कृपाल सिंह जी कहा करते थे, ''यदि हम अपने आपको पहले से ही तैयार कर लें तब हमें इतना अधिक दर्द महसूस नहीं करना पड़ता। यह दर्द इस तरह का होता है जैसे रेशमी कपड़े को कंटीली झाड़ियों में से निकालना अगर हम अपनी सारी ताकत लगाकर एक बार में ही रेशमी कपड़े को निकालेंगे तो वह कपड़ा तार–तार होकर फट जाएगा। आप रेशमी कपड़े को धीरे–धीरे काँटों से निकालें तो वह कपड़ा आसानी से निकल सकता है।''

अगर सतगुरु के पास जाने से पहले आप तैयार हैं तो आपको यह दर्द सहन नहीं करना पड़ेगा। जो कुछ रसल परकिन्स के साथ बीता जो कुछ उसे ध्यान में प्राप्त हुआ वह उसकी भक्ति, प्रेम और

ईमानदारी के कारण हुआ। उसे अन्य अनुभव भी हुए जो उस विवरण में नहीं लिखे गए हैं। रसल जैसा हृदय बनाना बहुत कठिन है। साधु बनना भी कठिन है। जो साधु किसी से नहीं मिलता अगर हम पक्के इरादे से और ईमानदारी से तलाश कर रहे हैं तो हम निश्चय ही उस साधु से फायदा उठाएंगे और कोई शक बाकी नहीं रह जाएगा।

मक्खनशाह लुभाणा गुरु तेगबहादुर की तलाश में गया और जब उसने गुरु तेगबहादुर को पहचान लिया तब वह छत पर जाकर जोर–जोर से बोला, ''गुरु लाधो रे! गुरु लाधो रे!'' उस समय वहाँ बाईस गुरु गद्दियाँ थीं और वे सब गुरु होने का दावा करते थे लेकिन जब मक्खनशाह लुभाणा ने गुरु तेगबहादुर को खोज लिया तो उसने सारी दुनियां में होका दिया, उसके मन में कोई शक नहीं रहा।

गुरु तेगबहादुर साहब सोढ़ी परिवार के थे। जब यह कहा गया कि सच्चा गुरु, बाबा बकाला नामक जगह पर है तो सोढ़ी परिवार के सारे सदस्यों ने वहाँ अपने–अपने प्रचारक भेज दिए। लेकिन जिस व्यक्ति ने पूरे गुरु की पहचान करनी होती है वह वहाँ जाएगा चाहे कुछ भी हो वह गुरु को पा लेगा।

मेरे पास आने से पहले रसल परकिन्स कई प्रेमियों के पास गया। उन्होंने उसे ऊँचे मंच पर बिठाया, चायपान करवाया और बहुत सम्मान दिया लेकिन इस फकीर के पास कोई दुनियावी मंच नहीं था और न ही मैं उसे कोई दुनियावी मान–सम्मान और यश दे सकता था। यदि रसल परकिन्स नाम, यश और सांसारिक चीजों का भूखा होता तो वह मेरे पास कभी न आता क्योंकि उसे मेरी बजाय दूसरों के पास अच्छा स्थान मिल सकता था। मेरे पास आकर उसे केवल डाँट सुननी पड़ी। कबीर साहब कहते हैं:

साधु स्यों झगड़ा भला, भलो न साकत संग।।

साधु के साथ झगड़ा करने पर भी वह हमें कुछ न कुछ देगा। गुरु के अंदर शब्द की धारा बह रही होती है यह धारा बहुत शक्तिशाली होती है, साधु झगड़े में भी हमें कुछ न कुछ देगा।

महाराज सावन कहा करते थे, ''कुम्हार घड़े को बनाते समय अंदर अपना हाथ भी रखता है अगर हम साधु के साथ झगड़ रहे हैं तो भी हम साधु से कुछ प्राप्त कर रहे हैं, फायदा उठा रहे है।''

प्यारयो! जो प्रेमी शान्त और स्थिर होता है सतगुरु उसे हमेशा देने के लिए तैयार रहता है। देने वाले में कमी नहीं होती सवाल तो लेने वाले का है। मैं तो जमीन के अंदर बैठा हुआ था मेरा दुनियां में आने का कोई इरादा नहीं था। ऐसे साधु को दुनियां में ले जाना आसान काम नहीं था। यह रसल परकिन्स, डोरिस मैथीजेट्ज, केन्ट बिकनल, एनी विगीन्स और अन्य प्रेमियों के साहस से संभव हो सका। उनके प्यार को देखकर ही मैं इस संसार में बाहर आया।

मुझे अच्छी तरह से याद है कि एक बार डोरिस ने मुझे बहुत सारी तस्वीरें दिखाई और उनके बारे में बहुत कुछ बताया। उस समय मैं अंदर से बहुत हँस रहा था। जब हम फलोरिडा गए हम वहाँ जोनस जेरार्ड से मिले उसने मुझसे पूछा, ''क्या आपने पहले कभी ऐसा हवाई अड्डा देखा है?'' मैंने उसे प्यार से बताया, ''अगर तुम अंदर जाओ तो इससे भी बढ़िया लाखों हवाई अड्डे देखोगे।''

प्यारयो! हमें भजन–अभ्यास में बैठना चाहिए। हमें अपने मन को रसल परकिन्स जैसा बनाना चाहिए। हमें रसल परकिन्स के उत्साह से प्रेरणा लेनी चाहिए; सतगुरु की दया सबके लिए है।

मैं अपने सतगुरु की शान और बड़ाई में क्या कह सकता हूँ? महाराज कृपाल ने माता मिल्ली को बताया था कि जो मेरे बाद में काम करेगा उसे इस संसार में माता की बहुत जरूरत होगी। माता मिल्ली जब तक जीवित रही उसने एक प्यारी माता की तरह मेरी देखभाल की। जब माता मिल्ली 77 आर.बी. आश्रम में आई तो उसने मुझे बताया कि मुझे ऐसा हुक्म है। मैने कहा, ''हाँ! मुझे एक माता की बहुत जरूरत है।'' उसने मेरी बहुत अच्छी देखभाल की।

मैं जब कभी सन्तबानी आश्रम अमेरिका या ओर जिस भी देश में गया, वह जहाँ कहीं भी होती सतसंग के बाद मेरे पास आती, मुझे चूमती और शुभ रात्रि कहती तो ही उसे सन्तोष मिलता था। वह मेरी सगी माता की तरह थी वह मेरी बहुत प्यारी माता थी। प्यारयो! मैं भारतीय संस्कृति में पलकर बड़ा हुआ था जहाँ चूमना बुरा माना जाता है लेकिन वह जब कभी मेरे पास आती, चाहे वहाँ कितनी ही संगत होती मैं अपने आपको उसके आगे कर देता और उसे चुम्बन लेने की इज़ाज़त देता था।

जब हम नैनिमो गए वहाँ पप्पू की दादी आई। वह पप्पू के पास चुम्बन लेने के लिए आई तब पप्पू पीछे हट गया। मैंने पप्पू से कहा कि इसे ऐसा करने दो यह तुम्हारा चुम्बन लेना चाहती है। मेरे कहने का भाव है कि यह हमारे भारतीयों की आदत में नहीं है; हमारी संस्कृति में चूमना बुरा माना जाता है। मैं अपने प्यारे सतगुरु की महिमा में क्या कह सकता हूँ? वही है जो अपनी पहचान देता है। आसमान में कृपाल है, कृपाल ही है जो आता है और हमारी रक्षा करता है। हर जगह पर कृपाल है। ऋषि मुनी भी सतगुरु की महिमा नहीं गा सकते।

जले कृपाल, थले कृपाल है भी कृपाल, हो सी भी कृपाल।।

महिमा कहि न जाए गुर समरथ देव,
गुर पार ब्रह्म परमेसुर अपरंपार अलख अभेव।

भारत में अभी भी कई लोग जीवित हैं जिन्हें मेरे प्यारे सतगुरु ने कहा था कि तुम लोग मेरे साध का ख्याल रखना। मैं अक्सर बताया करता हूँ कि जिस माता ने मुझे जन्म दिया था मैंने उसे नहीं देखा। जिस माता ने मेरा पालन–पोषण किया वह मुझसे बहुत प्यार करती थी। मैं भी उसके प्यार के मोह में इतना बंधा हुआ था कि मुझे और किसी से मोह नहीं था। मेरे लिए अपनी माता का प्यार और मोह छोड़ना बहुत मुश्किल था।

जब मैं प्यारे कृपाल से मिला आपने मुझे इतना प्यार दिया कि मैं अपनी माता के प्यार को भी भूल गया। मैं आपके प्यार में इतना पागल हो गया कि मैं सब कुछ भूल गया। मुझे केवल आपकी ही याद रही क्योंकि आपका प्यार ऐसा था जिसे मैं शब्दों में बयान नहीं कर सकता उसे केवल आत्मा ही महसूस कर सकती है।

जब महाराज कृपाल इस संसार से विदा हो गए मेरी आँखों से दूर हो गए तो मेरे लिए इस संसार में रहना मुश्किल हो गया। ऐसा नहीं कि अब मैं उन्हें देख नहीं रहा हूँ; आप सदा मेरे साथ है। जो अंदर गया है जिसने शब्द स्वरूप को अंदर प्रकट कर लिया है वही इसका अनुभव कर सकता है। केवल वही जानता है कि सतगुरु देह के दर्शन की क्या कीमत है? वही जानता है कि सतगुरु की देह दर्शन से कितने पाप कर्म कट जाते हैं। आप मेरे अंतर में है, सदा मेरे साथ हैं, मेरा मार्ग दर्शन कर रहे हैं और मेरी रखवाली कर रहे हैं।

मुझ पर कभी कोई जिम्मेवारी नहीं रही क्योंकि सारी जिम्मेवारी मेरे पिता संभाला करते थे। मैं सदा उनको सांसारिक जिम्मेवारियाँ

संभालते देखकर खुश होता था। आप ऐसे इंसान की कल्पना करें! जिसने कभी कोई सांसारिक जिम्मेवारी न संभाली हो अगर उसे रुहानियत की जिम्मेवारी दे दी जाए तो वह कैसा महसूस करेगा? अब सतगुरु हमारे सामने नहीं है आपने रुहानियत की जिम्मेवारी मुझ पर डाल दी है। यह बहुत कठिन काम है क्योंकि मैं इस लायक नहीं था।

मुझे आपसे जो प्यार मिला मैं उसे कभी नहीं भुला सकता। मैं सदा आपके प्यार को याद करता हूँ और यही कामना करता हूँ कि आप सदा मेरी आँखों के सामने रहें। सच्चा शिष्य जो अंदर जाता है जिसने अपने अंतर में गुरु की महानता और शान को देखा है, वह कभी भी अपने गुरु की पगड़ी पहनने की कामना नहीं करेगा। ऐसा शिष्य सतगुरु के संसार छोड़ने के बाद एक क्षण भी इस संसार में रहने की कामना नहीं करेगा; वास्तव में वह मरना पसन्द करेगा और अपने सतगुरु के जीवन काल में ही संसार को छोड़ना चाहेगा।

यह मशहूर कहावत है अगर कोई अपने प्यारे की सेज पर शरीर छोड़ देता है तो उसकी हड्डियाँ या राख स्वर्गों को जाती है। इसी तरह एक सच्चा शिष्य चाहता है कि जब तक उसका सतगुरु देह स्वरूप में हो तभी वह संसार को छोड़ दे ताकि उसे सतगुरु के वियोग को गले न लगाना पड़े। मैं दिल की गहराई से कहता हूँ कि मैं आपसे भजन–अभ्यास नहीं करवा रहा बल्कि मैं भी कृपाल का सेवक बनकर आप लोगों के साथ बैठकर भजन–अभ्यास कर रहा हूँ।

अगर मैं आजकल के गुरुओं की तरह होता तो आपको भारत में चारों ओर घुमाता। अच्छे होटलों में ठहराता और अच्छे–अच्छे दृश्य और चीजें दिखाकर वापिस लौटाता जैसा कि आजकल के गुरु करते हैं अगर मैं अमेरिका जाता तो मैं चौंकड़ी लगाकर अपने घुटनों

और आपसे चौंकड़ी लगवाकर आपके घुटनों को तकलीफ न देता। मैं आपको समुन्द्र के किनारे सुन्दर दृश्यों को दिखाने ले जाता। मैं खुद भजन–अभ्यास कर रहा हूँ और आपसे भी भजन–अभ्यास करवा रहा हूँ क्योंकि मैं अपने आपको महाराज कृपाल का छोटा शिष्य या छोटा सा सतसंगी समझता हूँ।

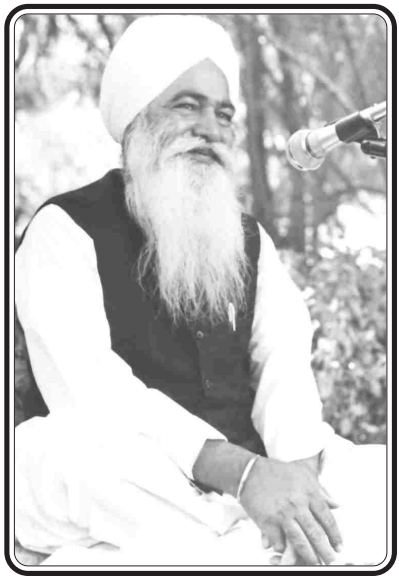

जो प्रेमी यहाँ भजन–अभ्यास कर रहे हैं और जब मैं आपके देश में होता हूँ वहाँ भजन–अभ्यास कर रहे होते हैं तो उन्हें सदा ही लाभ की प्राप्ति होती है। अन्त में आपको यह महसूस होगा कि महाराज कृपाल के सतसंगी के साथ भजन–अभ्यास करके आपको कितना फायदा हुआ है, एक साधु के साथ भजन–अभ्यास करके कितनी प्राप्ति हुई है?

गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैं, ''हमारी सच्ची बैठक वह है जो हम नाम का अभ्यास करने वालों के साथ करते हैं, वह सगंति हमारी भक्ति में गिनी जाएगी।''

गुरु नानक साहब कहते हैं, ''कभी भी साकत की संगत न करें। जो परमात्मा की भक्ति नहीं करता चाहे वह ऊँचे कुल में पैदा हुआ हो! चाहे कितना ही चतुर–चालाक हो! चाहे कितना ही सुन्दर हो! अगर उसके हृदय में सर्वशक्तिमान परमात्मा का प्यार नहीं है तो आप उसे मरा हुआ जानें।''

♠♠♠